सारांश

शिक्षा के क्षेत्र में, स्कूली शिक्षा बच्चे के जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वैश्विक शिक्षा की बदलती दुनिया में माता-पिता अपने बच्चे के अध्ययन के बारे में बहुत गंभीर हो जाते हैं। यहां तक कि अगर किसी व्यक्ति की सामाजिक-आर्थिक स्थिति कमजोर है, तो भी वे अच्छी शिक्षा प्रदान करने का प्रयास कर सकते हैं। पब्लिक स्कूलों की तुलना में सरकारी स्कूलों का स्तर बहुत कम है। यह केवल माता-पिता की मानसिकता के कारण कहा जा सकता है कि अपने बच्चे को भेजने के लिए उनकी पहली पसंद सार्वजनिक स्कूलों में भेजना है। यहां एक बड़ी चुनौती शिक्षकों खासकर सरकारी स्कूलों के सामने है। अध्ययन का शीर्षक है "प्राथमिक शिक्षकों के शैक्षणिक सामग्री ज्ञान के संबंध में छात्रों के सीखने के अध्ययन का अध्ययन"। यह अध्ययन जिला महेंद्रगढ़ में आयोजित किया गया था, जहां दो सौ छिहत्तर स्कूलों को लिया गया था। अध्ययन अध्यापक शिक्षण सामग्री ज्ञान को जानने के लिए आधारित है जिसमें शिक्षण प्रक्रिया शामिल है।

यहाँ प्रौद्योगिकी इनपुट बहुत महत्वपूर्ण है। वर्तमान सरकार स्कूलों में प्रौद्योगिकी संचालित शिक्षण प्रणाली को लागू करने के लिए बहुत उत्सुक है। व्यक्तिगत साक्षात्कार कार्यक्रम भी आयोजित किया गया था। इस शोध कार्य में सीखने के परिणाम शैक्षणिक स्कोर हैं जो छात्र वर्ष के अंत में प्राप्त करते हैं। इसका यह भी अर्थ है कि छात्र विषय की अवधारणा को समझने में सक्षम हैं, सिद्धांत को व्यवहार में लागू कर सकते हैं, आउटपुट का विश्लेषण कर सकते हैं और अवधारणा के पुन: उपयोग की समझ रख सकते हैं। इसे स्कूलों में संख्यात्मक मूल्यों के रूप में मापा जाता है। एक छात्र को जितने अधिक अंक मिलते हैं उसका अर्थ है कि अधिक अवधारणाएं पूरी तरह से विकसित हैं। कम अंक दर्शाता है कि छात्र अवधारणा को पूरी तरह से समझने में सक्षम नहीं है। सीखने के परिणाम विभिन्न कारकों पर निर्भर करते हैं जैसे माता-पिता द्वारा ध्यान, शिक्षक द्वारा उपयोग किए जाने वाले उपयुक्त शिक्षण, स्कूलों का वातावरण आदि। इस अध्ययन में शैक्षणिक सामग्री ज्ञान को परिभाषित किया गया है: सामाजिक विज्ञान का शिक्षण एक उच्च संज्ञानात्मक और जटिल गतिविधि है जिसमें अन्य डोमेन शामिल हैं। यह प्राथमिक विषय पर सामाजिक

विज्ञान विषय की सामग्री और शैक्षणिक ज्ञान का एक मिश्रण है। शैक्षणिक सामग्री ज्ञान का अर्थ है विभिन्न शिक्षण विधियों, शिक्षण तकनीकों, शिक्षण कौशल और शिक्षण सहायक सामग्री जिसमें प्रौद्योगिकी संचालित शिक्षण शामिल है। इन सभी तरीकों का उपयोग करते हुए जब शिक्षक कक्षा में व्याख्यान देते हैं तो यह कहा जा सकता है कि सामग्री अच्छी तरह से परिभाषित और अच्छी तरह से प्रस्तुत की गई है। इस अध्ययन में प्राथमिक शिक्षक का मतलब माध्यमिक स्कूलों के शिक्षकों से है जो कक्षा 8 वीं तक पढ़ा सकते हैं। डेटा के विश्लेषण से पता चलता है कि शिक्षक को उस विषय की शैक्षणिक सामग्री का ज्ञान रखना चाहिए जो अंत में शिक्षार्थी को नया ज्ञान बनाने और पुराने को सहसंबंधित करने में सक्षम होना चाहिए। परिणाम से पता चलता है कि शिक्षार्थी सबसे कम से उच्चतम तक कैसे जाते हैं यानी याद रखें, समझें, विश्लेषण लागू करें, मूल्यांकन करें और फिर बनाएं। शिक्षण का अंतिम उद्देश्य बच्चे, बच्चे को शिक्षित करना और अपनी आजीविका अर्जित करना है और बच्चा समाज में रह सकता है। सामाजिक विज्ञान के शिक्षण का राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद का पोजीशन पेपर भी दर्शाता है कि सामाजिक विज्ञान की शिक्षा

को अधिक प्रभावी, नवीन और सुखद बनाने की आवश्यकता है। शिक्षार्थी अपने स्थानीय परिवेश से तथ्यों का पता लगाने और फिर एक अलग दृष्टिकोण देने के लिए कह सकते हैं। इस तरह वे एक नया ज्ञान रच सकते हैं। इस तस्वीर में विभिन्न उदाहरण दिए गए हैं जो प्राथमिक स्तर पर भी शिक्षक के लिए विचारोत्तेजक हैं। डिजिटलीकरण के लिए सरकार ने पहल की है। हर स्कूल में कंप्यूटर लैब होनी चाहिए और हर शिक्षक को डिजिटलाइजेशन से परिचित होना चाहिए। प्रौद्योगिकी का प्रभाव वर्तमान में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में देखा जाता है। यह कक्षा में प्रौद्योगिकी के उपयोग का प्रारंभिक चरण है। निष्कर्ष यह है कि अच्छा शैक्षणिक सामग्री ज्ञान इष्टतम परिणाम की ओर जाता है। शैक्षणिक सामग्री का ज्ञान पारंपरिक नहीं होना चाहिए लेकिन इसे नवीनतम तकनीक को अपनाने की जरूरत है।

Abstract

In the field of education, school education plays an important part in the life of a child. In the changing word of global education, the parents become very serious about their child's study. Even if the socio-economic status of a person is low then even they may try to provide good education. The standards of government schools are very low in comparison of public schools. This can be said only because of the mindset of the parents that their first choice to send their child is to send in public schools. Here a big challenge are in front of the teachers especially the government schools. The study is entitled *"Study of Learning Outcome of Students in Relation to Pedagogical Content Knowledge of Elementary Teachers".* The study is conducted in District Mahendergarh where two hundred seventy-six schools were taken. The study is based to know the teachers pedagogical content knowledge which involves teaching learning process. Here technology input is very crucial. Present government is very keen to implement technology driven teaching learning system in schools. The personal interview schedule was also conducted. In this research work the learning out comes is the academic scores which student achieve at the end of the year. It also means that students are able to understand the concept of the subject, can apply the theory into practice, can analysis the output and can have an understanding of re use of the concept. It is measured in the form of numeric values in the schools. The more marks a student gets mean the more concepts are fully developed. The less marks reflects that student is not able to understand the concept completely. Learning outcomes is depending on various factors like attention by parents, appropriate pedagogy used by the teacher, environment of schools etc. The Pedagogical Content Knowledge is defined in this study is as: Teaching of social science is a highly cognitive and complex activity which

involves various domains. Pedagogical content knowledge means the various teaching methods, teaching techniques, teaching skills and teaching aids which includes technology driven teaching. Using all these methods when a teacher deliver lecture in the classroom than it can be said that content is well defined and well presented. In this study the elementary teacher means teachers of secondary schools who can teach up to class 8^{th} standard. The analysis of the data reflects that the teacher must keep the pedagogical content knowledge of the subject which must have finally the learner shall be able to create the new knowledge and correlate the older one. The result shows that how learners moves from lowest to highest i.e. remember, apply analyze, understand, evaluate and then create. The ultimate aim of teaching is to educate child, child and earn his livelihood and child can live in society. The NCERT Position Paper of teaching of social science also reflects that there is a need to make learning of social science more effective, innovative and enjoyable. Learners may have asked to explore the facts from their local surroundings and then give a different outlook. In this way they can create a new knowledge. There are various examples given in this picture which are suggestive for the teacher even at elementary level. Government has taken initiative for digitization. Every school must computer lab and every teacher must acquaint with the digitalization. The impact of technology is seen now a day in teaching learning process. This is the initial stage of use of technology in classroom. The findings are that the sound Pedagogical Content Knowledge leads to optimum result. Pedagogical content knowledge should not be traditional but it needs to adopt the latest technology.